बागबान भी बैठा है। माली भी है। फूल भी है। यह नई बात है नां। कोईनया अगर सुनेंगे तो कहेंगे कि यह क्या कहते है। बागबान फूल आद सब क्या है। ऐसी बातें तो कब शास्त्रो मे सुनी नही। तुम बच्चे जानते हो कि याद भी करते है तो खिवय्या बागबान को अवयहां ओय है यहां से पार ले जाने। बाप कहते है कि याद की यात्रा पर रहना है। (अपने को आपही देखो हम कितनी दूर जा रहे है। कितना अभी सतोप्रधाना अवस्था तक पहुचना है) जितनी-2 सतोप्रधान अवस्था होती जायगी समझेंगे कि हम लौट रहे है। कहां तक हम पहुचे है सारा मदार याद की यात्रा पर है। खुशी भी चढ़ी रहेगी। जितनी-2 जो मेहनत करते है उतनी ही उनमे खुशी आवेगी। जैसे स्कूल मे परिक्षा के दिन होते है तो सब स्टुडण्टस समझ जाते है कि हम कहां तक आगे बढ़े है। यहां भी ऐसे है। हर एक बच्चा अपने को जानता है कि हम कहां तक खशबुदार बच्चा हूं। कितना खशबुदार औरों को बनाता हूं। क्योकि इस समय सभी बदबुदार कांटे है। यहां गाया ही जाता है कांटो का जंगल। वो है फूलो का बगीचा। मुसलमान लोग काह कहते है गार्डन आफ अल्लाह। समझते है कि वहां एक बगीचा है। वहां जो जाता है उनको खुदा फूल देता है। मन मे जो कामना होती है वो पूर्ण करता है। बाकी ऐसे तो नही कि कोई फूल उठा कर देंगे। जैसा जिनकी बुधी मे है वो सा० होता है। यहां सा० पर कुछ भी मदार नही है। भक्ति मार्ग मे तो सा० के लिये गला भी काट देते है। मीरा को सा० हुआ उनका कितना नाम है। वो भक्ति माल है। अर्थात दुगति माल। जो महान भक्त है वो है दुर्गति को पाये हुये। बाप भी समझाते है कि यह बहुत ऊंचा था। अब बिलकुल नीच है। भक्ति मार्ग मे ऐसे नही कहेंगे। भक्ति तो है ही दुर्गति मार्ग। भक्ति को तो आधा कल्प चलना ही है। ज्ञान है ही नही। है ही भक्ति दुर्गति का राज्य तो उसको रांग कैसे समझे? वेदो आद का बहुत मान है। कहते है वेद तो हमारे प्राण है। अब तुम जानते हो कि वो वेद शास्त्र आद सब झूठे है। यह है ही भक्ति मार्ग के लिये। भक्ति का कितना वडाझाड है। ज्ञान का अर्थ तुम जानते हो। ज्ञान है बीज। भक्ति मे कितनी मेहनत है। कितने मैले आद लगते है। भक्ति दुर्गति से तो मैले ही होते जाते है। अब ज्ञान से तुम कितने शुध होते हो। खुशबुदार बनते हो। यह तुम्हारा बगीचा है। कांटा किसीको नही कहेंगे। अगर विकार मे कोई नही जाते होंगे तो कहेंगे कि इस बगीचे मे एक भी कांटा नही है। कांटे है कलयुग मे। अब यह पुरषोतम संगम युग है। इसमे कांटा कहां से आया। अगर कोई कांटा बैठा है तो अपने को ही नुकसान पहुचाता है। क्योकि यह इन्द्र सभा है नां। इसमे सब ज्ञान परियां बैठी है। ज्ञान डांस करने वाली परियां। मुख्य-2 के नाम:- पुखराज पुरी, नीलम परी आद-2 पड़े है। वो ही नवरतन गाये जाते है। परन्तु यह कौन थे किनको भी पता नही है। भक्ति मार्ग मे तो बहुत कुछ चलता है। यहां तो कुछ भी नही। बाप सिर्फ कहते है कि मुझे याद करो। तुम बच्चो की बुधी मे अभी समझ है। 84का चक्र भी अब बुधी मे है। शास्त्रो मे तो 84लाख कह देते है। मीठे-2 सिकीलधे बच्चो को तो बाप ने समझाया है कि तुमने ही 84जन्म लिये है। शास्त्रो मे तो 84लाख कह देते है। अभी तुम सतोप्रधान से तमोप्रधान बने हो फिर सतोप्रधान बनना है। कितना सहज है। भगवानोवाच्य बच्चो प्रति। मामेकम याद करो। गीता पढ़ने से यह समझ नही आवेगा कि परमात्मा आत्माओं से बात करते है। कोई की भी बुधी मे नही होगा। गीता वालो के पास जाओ तो उनकी बुधी मे कुछ है नही। सिर्फ संस्कृत मे किताब है वो याद कर लेते है। यह भी एक धन्धा हो जाता है। कोईएक बच्चे को कण्ठ करवा कर सिखा देते है। गीता और उनका अर्थ थोड़ा कण्ठ करवा लेते है। फिर ढेर के ढेर लोग उनके पास आते है। इसको कहा जाता है कनरस। भक्ति मार्ग मे तो है ही कनरस। यहां पर कनरस की कोई बात नही। सिर्फ है आत्मायें बाप को याद करो। बाप कहते है मीठे-2 बच्चो। सब मीठे-2 फूल ही आते है। कांटा कोईनही। हां माया के तूफान तो आवेंगे। माया ऐसी बड़ी है तो जो झट फंसा देती है। फिर पछ्तावेंगे कि हमने यह क्या

क्या किया। हमारी तो की कराई सारी कमाई चठ हो गई। यह है बगीचा। बगीचे मे अच्छे-2 फूल भी होते है। इस बगीचेमे भी कोई तो बहुत फर्स्ट क्लास फूल होते जाते है। जैसें मुगलगार्डन मे अच्छे-2 फूल है। सब जाते है उनको देखने। यहां तुम्हारे पास तुमको कोई देखने तो आवेंगे नही। तुम कांटो को क्या मुह दिखावेंगे। वो तो छी-2 है नां। गायन भी है मूत पलीती… बाबा को जपसाहिब सुखमणी आद सब याद थी।अखण्ड पाठ भी करते थे। रहते ही मन्दिर में थे। मन्दिर की चीज सारी हमारे पर थी। तुम अभी समझते हो कि मूत पलीती कपड़ धोये का अर्थ क्या है। महिमा सारी बाप ही की है। मेढको मुआफिक सिर्फ बोलते है।अर्थ कुछ नही समझते।जैस गाते है पतित पावन सीता राम… और बोलो कि तुम पतित हो तो गुस्सा लग जावेगा। अभी तुम बच्चो को बाप बैठ समझाते है। बच्चो को कहते भी है कि अच्छे-2 फूल लाओं। जो अच्छे-2 फूल लावेंगे वो ही अच्छा फूल माना जावेगा। सब कहते है हम तो श्रीलक्ष्मी परायण बनेंगे तो माना कि सब गुलाब के फूल हो गये नां। एक आब्जेक्ट ही यह है नां। गोया सब सदा गुलाब होगें। ऐसा सिध होता है। बाप कहते है अच्छा तुम बच्चो के मुख मे गुलाब। सब पुरुषार्थ कर सदसगुलाब बनो। स्वर्ग मे जाने लायक जरूर बनना है। ढेर के ढेर बच्चे है।प्रजा तो बहुत बन रही है। वहांहै ही राजा और रानी। सतयुग में तो वजीर होते नही।क्योंकि राजा मे ही फुल पॉवर रहता है।वजीर आद से राय आद लेने की दरकार नही रहती है। नही तो राय देने वाला बडा हो जावें। वजीर रखते ही है राय देने के लिये। वहां तो राय की दरकार नही। भगवान भगवती को राय की दरकार नही।वजीर आद तब होते है जब पतित होते है। भारत की ही बात है। और कोई खण्ड नही जहां राजाओ को राजा माथा टेकते हो। यहां ही दिखाया जाता है ज्ञान मार्ग मे पुज्य।अज्ञान अथवा भक्ति में पुजारी। वो डबल सिरताज। वो सिंगल ताज। बाप कहते है कि भारत जैसा पवित्र खण्ड कोई है नही। सब कहते है कि पैराडाईज बहिश्त था। तुम इसके लिय ही पढ़ते हो। अभी तुमको फूल बनना है। बागवान आया है। माली भी है। माली भी नम्बरवार होते है। गवर्मेन्ट हाउस के माली को जरूर जास्ती तनख्वाह होगा। यहां भी नम्बरवार है। कोई अच्छा माली है। बच्चे भी समझते है कि यह बगीचा है। कांटे नही। कांटे दुःख देते है। बाप तो किनको कब दुःख नही देते। वो है ही दुःख हर्ता सुख कर्ता। कितना मीठा बाबा है। तुम बच्चो को बाप पर लव है। बाप भी बच्चो को लव करते है नां। यह पढाई है। बाप कहते है मै प्रेक्टीकल मे तुमको समझाता हूं। यह भी पढ़ते है। पढकर औरो को भी पढाओं तो कांटों से फूल बनो। और भी बनें। भारत ही महादानी गाया हुआ है। अभी तुम कितने महादानी बनते हो। अविनाशी ज्ञान रत्नो का तुम दान करते हो। बाबा ने समझाया है कि आत्मा ही रूप बसन्त है। बाप भी रूप बसन्त है। इनमे सारा ज्ञान है। ज्ञान का सागर है परमपिता परमात्मा। वो आथारटी है नां। मनुष्य तो कुछ भी नही जानते। ज्ञान का सागर एक बाप ही गाया जाता है। इसलिय ही गाया जाता है कि सारे समुन्द्र की स्याही बनाओं, जंगल की कलम बनओं तो भी कम होने वाला नही है।और फिर एक सैकिंड़ मे जीवन मुक्ति का भी गायन है। तुम्हारे पास कोई शान्ति आद नही है। कहां कोई भी पण्डित आद पास जावेंगे तो समझेंगे कि यह पण्डित बहुत पढा हुआ है। आथारटी है। इनको सब वेद शास्त्र कण्ठ किया हुआ है। फिर संस्कार ले जाते है तो छोटेपन मे ही फिर वो हो अध्ययन करते है। तुम संस्कार न ले जाते हो। तुम पढाई की रिजल्ट ले जाते हो। तुम्हारी पढाई पुरी होगी फिर रिजल्ट निकलेगीफिर वो ही पद पा लेंगें। ज्ञान थोडेई ले जावेंगे जो कि किसीको सुनावें। वो संस्कार ले जाते है तो छोटेपन मे ही विदवान आद बन जाते है। यहां तो तुम्हारी पढाई है। इजिनकी प्रारब्ध नई दुनियां में मिलनी है। तुम बच्चों को बाप ने समझाया है कि माया भी कोई कम शक्तिवान नही है। माया को शक्ति है दुर्गति मे ले जाने की। परन्तु उसकी महिमा थोडेई करेंगें कि वो सर्व शक्तिवान है। वो तो देखो नां दुःख देने मे शक्तिवान

है नां। बाप सुख देने मे सर्वशक्तिवान है इसलिये ही उनका गायन है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। तुम सुख उठाते तो दुःख भी जरूर उठाना ही है। हार और जीत किनकी है उसका भी पता होना चाहिये नां। बाप भी भारत मे आते है। जयन्ति भी भारत मे ही मनाई जाती है। यह किसको भी पता नही है कि शिव बाबा कब आया। क्या आकर किया था। नाम निशान ही गुम कर दिया है। कृष्ण बच्चे का नाम दे दिया है। वास्तव मे बिलवेड बाप की महिमा अलग, कृष्ण की महिमा अलग है। वो निराकार है। वो साकार है। कृष्ण की महिमा है सर्वगुण सम्पर्ण.... शिव बाबा की सर्वगुण समपन्न यह महिमा नही करेंगे। जिसमे गुण है वो तो फिर अवगुणी भी होगा। इसलिये बाप की महिमा बिलकुल ही अलग है। कृष्ण है साकार। उनको निराकार थोडेई करेंगे। यौं तो बच्चें समझते है कि हम आत्मायें भी निराकार है। ~~अल्मले=मृत्यु=~~ अकाल मूर्त। बाप को अकाल मूर्त कहते है नां। हम भी अकाल मूर्त है। आत्मा को काल खा ही नही सकती। अकाल मूर्त का (आत्मा का) यह तख्त है। हमारा बाप भी अकाल मूर्त है। काल शरीर को ही खाता है। आत्मा को नही खा सकता। यहां अकाल मूर्त को बुलाते है। सतयुग मे नही बुलावेंगें। क्योंकि वहां पर तो सुख ही सुख है। इसलिये ही गाते भी है कि दुःख मे सिमरण सब करें दुःख मे करे नां कोये। अब तुम बच्चे जानते हो कि रावण राज्य मे कितना दुःख है। बाप तो स्वर्ग का मालिक बनाते है। फिर वहां आधा कल्प कोई पुकारेंगें ही नही। जैस लौकिक बाप बच्चों को श्रृंगार कर फिर वानप्रस्थ लेते है। फिर सबकुछ बच्चों को देकर कहेंगे कि अभी हम सत्संग मे जाते है। कुछ खाने पीने के लिये भेजते रहना है। यह बाप तो ऐसे नही कहेंगें नां। यह तो कहते है मीठे-2 बच्चों हम तुमको विश्व की हम बादशाही देकर वानप्रस्थ मे चले जावेंगें। हम थोडेई कहेंगें कि खाने के लिये भेजना। लौकिक बच्चों को तो फर्ज है बाप की सम्भाल करना नही तो खोवेंगें कैसे? यह बाप तो कहते है कि मै तो निष्काम सेवाधारी हूं। मनुष्य कोई निष्काम हो नही सकता। भूखा मर जावे। हम थोडेई भूख मरेंगें। हम थोडेई भूख मरेंगें। हम तो अभोगता है। हम तुमको विश्व की बादशाही देकर फिर जाकर विश्राम लेंगें। फिर हमारा पार्ट बन्द हो जाता है। फिर भक्ति मार्ग मे शुरू होता है। यह अनादी ड्रामा बना हुआ है जो बाप ही बैठ समझाते है। वास्तव मे तुम्हारा पार्ट सबसे जास्ती है तो जो आफरीन भी तुमको मिलनी चाहिये। मै आराम करता हूं तब तुम ब्राहमाण्ड के भी विश्व के भी मालिक बनते हो। तुम्हारा बडा नाम होता है। इस ड्रामा का राज भी तुम जानते हो। मूल मतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन। यह ड्रामा कैसे चक्र लगाता है यह तुमको पता है। तुम हो ज्ञान के फूल। दुनियां मे एक भी नही। रात-दिन का फर्क है। वो रात मे है। तुम दिन मे जाते हो। आजकल तो देखा वनउत्सव करते रहते है। भगवान तो मनुष्यों का मनोत्सव कर रहे है। वो फिर कांटे लगाते रहते है हर वर्ष। अभी तुम पढ़ रहे हो। तुम बुलाते भी हो कि हे पतित पावन आओं। अब बाप कहते है कि याद करो तो खाद निकल जावे। तुम बच्चो को तो कितनी खुशी होनी चाहिये। तुम जानते हो कि हम फूल बन रहे है। हम कितनो का कल्याण करते है। यह भी व्यापार है। कोई विरला व्यापारी यह व्यापार करें। बाबा को सौदागर जादुगर भी कहते है। कमाल करते है। जो मनुष्य को देवता रंक को रंक बना देते है। अभी अभी बेहद के बाप से तुम सौदा लेने आये हो। हमको रंक से राव बनाओं। यह तो बहुत अच्छा ग्राहक है। इनको तो तुम कहते भी हो दुख हर्ता सुख कर्ता। इन जैसा दाता कोई होता है? नही। वो है ही सुख देने वाला। बाप कहते है कि भक्ति मार्ग मे भी मै तुमको देता हूं। यह ड्रामा मे नूंध है। नाम सिर्फ मेरा गाया जाता है। बाप समझाते है कि मेरा पार्ट भक्ति मार्ग मे भी नूंधा हुआ है। कोई हनुमान की भक्ति करेंगें तो हनुमान का सा० होगा। गनेश के भक्त को उसका सा० होता है तो वो समझते है कि सगमे परमात्मा ही परमात्मा है। परमात्मा सर्वव्यापी है। अब बाप बैठ समझाते है कि मै क्या-2 करता हूं। आगे चल कर समझाते रहेंगें जैसे पहले भी समझा था। अच्छा बच्चो को वालेकमसलाम